37

''मसीह विरोधी'' और प्रकाशितवाक्य

(11)

''मसीह विरोधी'' नाम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कहीं नहीं मिलता। तौ भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर टीकाओं में इसकी भरमार है। विशेषकर अध्याय 11 में कुख्यात पशु के लिए इसका परिचय दिया गया है। जेम्स एफिर्ड ने लिखा है,''... प्रकाशितवाक्य में ... पशु के ... इस शब्द ['मसीह विरोधी'] का इस्तेमाल इतनी बार हुआ है ... कि लगभग हर कोई इसे इसी शब्द से जानता है।''[1] प्रकाशितवाक्य पर अपने अध्ययन में कभी न कभी आपका वास्ता ''मसीह विरोधी'' शब्द से पड़ेगा, इसलिए इस शब्द का संक्षिप्त अध्ययन करना उचित है।

लोगों का अनुमान

बाइबल में ''मसीह विरोधी'' शब्द केवल यूहन्ना के पत्रों में ही मिलता है: 1 यूहन्ना 2:18, 22; 4:3; 2 यूहन्ना 7. यूहन्ना इस बात में स्पष्ट था कि उसके कहने का तात्पर्य किसी विशेष व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि यीशु के परमेश्वर होने का इनकार करने वाले *किसी भी* मनुष्य के लिए है। इस तथ्य ने लोगों को द्वितीय आगमन से थोड़ा पहले अलौकिक लगने वाले जीव के बारे में जिसे मसीह विरोधी कहा जाता है, विस्तृत शिक्षाएं बनाने से रोका नहीं है।[2] आमतौर पर यह माना जाता है कि वह बहुत अधिक चतुर और ज़बर्दस्त व्यक्तित्व वाला दुष्टता से भरा व्यक्ति होगा। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले एक प्रसिद्ध लेखक का यह मानना है कि मसीह विरोधी अब ''शैतानी स्वप्नों को पूरा करते हुए'' यूरोप में कहीं रह रहा है।[3] इस असाधारण व्यक्ति अर्थात बुराई के मूरत रूप की अवधारणा धार्मिक सोच में इतनी रम गई है कि बहुतों के मन में मसीह विरोधी ने बहुत पहले शिक्षा का रुतबा खोकर एक निर्विवाद तथ्य बना दिया है।

इस काल्पनिक व्यक्ति के बारे में अनुमान मूर्तिपूजकों की मिथ्या, यहूदियों की परम्पराओं बाइबल की कुछ अस्पष्ट आयतों और मनुष्य के मन की उपज से लिए गए हैं।[4] बाइबल की अस्पष्ट आयतों के सम्बन्ध में ''पाप का पुरुष''[5] पर पौलुस की जटिल आयतें 2 थिस्सलुनीकियों 2 में मिलती हैं।

पौलुस का ''पाप का पुरुष''
(2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10)

पौलुस ने लिखा:

> किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात विनाश का पुत्र प्रकट न हो। जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रकट करता है। ... (2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10)।

इन ''अत्यधिक अस्पष्ट'' आयतों की[6] जिन्हें ''नये नियम की सबसे कठिन आयतों में से'' माना जाता है, विस्तृत समीक्षा करने की न तो समय और न स्थान अनुमति देगा।[7] ''विनाश के पुत्र'' के रूप में किसी विशिष्ट व्यक्ति,[8] जो आमतौर पर वर्तमान में मसीहियत का सबसे प्रसिद्ध विरोधी हो, की पहचान करने के अनगिनत प्रयास होते रहे हैं। परन्तु कई लेखक यह मानते हैं कि इन आयतों में पौलुस अपोकलिप्टिक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था।[9] यदि ऐसा है तो इस प्रेरित के मन में किसी विशिष्ट व्यक्ति की बात कदापि नहीं होगी। रेमंड कैल्सी ने कहा है, ''... हो सकता है कि [पौलुस ने] अपोकलिप्टिक रूप में भलाई और बुराई के बीच बड़े युद्ध और दोनों के अन्तिम परिणाम को दर्शाने के लिए 'पाप का पुरुष' इस्तेमाल किया हो।''[10]

पौलुस का ''पाप का पुरुष'' जो भी हो, उसमें यूहन्ना द्वारा ''मसीह विरोधी'' कहे जाने वालों में बहुत कम समानता थी: यूहन्ना के ''मसीह विरोधी'' बहुगिनती में थे और मुख्यतया झूठी शिक्षा देने के दोषी थे (1 यूहन्ना 2:18, 22), जबकि पौलुस का ''पाप का पुरुष'' एक आदमी था (यदि प्रेरित के शब्दों को अक्षरश: लिया जाए) जिसने परमेश्वर होने का दावा किया था (2 थिस्सलुनीकियों 2:3, 4)! हार्वे ब्लेनली ने ध्यान दिलाया है कि यूहन्ना का ''मसीह विरोधी'' पौलुस वाले ''विनाश का पुत्र'' से बहुत कम है।[11]

इसके अलावा, पौलुस के ''पाप का पुरुष'' में मसीही विरोधी की वर्तमान प्रसिद्ध अवधारणा के साथ कुछ अधिक साझा नहीं है: जब पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों लिखा था तो उसका ''पाप का पुरुष'' उसके पाठकों के लिए नया नहीं था (2:5) और यह उनके समय की लहर से सम्बन्धित था (2:7)। इसके विपरीत मसीह विरोधी के आधुनिक अनुमान के अनुसार, जिस समय यह प्रेरित लिख रहा था, उस समय के बाद दो हज़ार या इससे अधिक वर्षों बाद मसीह के विरोधी ने प्रकट होना था। 2 थिस्सलुनीकियों 2 में पौलुस की वर्तमानकाल की भाषा के प्रकाश में, रोलिन वाकर ने ज़ोर दिया ''हमें चाहिए ... कि भविष्यवाणी को पहली शताब्दी के हवाले से देखें।''[12]

यूहन्ना के ''मसीह विरोधी''
(1 यूहन्ना 2:18, 22; 4:3; 2 यूहन्ना 7)

मनुष्यों के अनुमानों को पीछे छोड़ते हुए ''मसीह विरोधी'' (या ''मसीह के विरोधी'') के विषय में हमें उतना ही *पता* है, जितना 1 और 2 यूहन्ना में बताया गया है। बाइबल की व्याख्या का एक मूल नियम यह है कि ''[परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए] लेखक की व्याख्या सर्वोत्तम मानी जा सकती है।''[13] समय और स्थान हमारे पास फिर सीमित है, परन्तु आइए ''मसीह विरोधी'' पर कम से कम यूहन्ना की शिक्षा को संक्षेप में देखें:

यूहन्ना ने इस विषय का परिचय इन शब्दों से कराया, ''हे लड़को, यह अन्तिम समय है,[14] और तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आने वाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इससे हम जानते हैं कि यह अन्तिम समय है'' (1 यूहन्ना 2:18)। ''मसीह का विरोधी'' शब्द वह मिश्रित यूनानी शब्द है, जो प्रसिद्ध *क्रिस्टोस* (''अभिषिक्त'') के साथ यूनानी उपसर्ग *एंटी* (''विरोधी'') को मिलाता है। इस शब्द का ''अर्थ 'मसीह के विरुद्ध' या 'मसीह के बजाय,' या शायद दोनों को मिलाने वाला, 'मसीह के वेश में , मसीह का विरोध करने वाला' हो सकता है।''[15] यूहन्ना के पत्रों में अधिकतर पाया जाने वाला विचार यह है कि ''मसीह विरोधी'' मसीह का *विरोध करने वाला* है।

यह विचार फैलाया जा रहा था कि ''मसीह विरोधी आ रहा है।'' अफवाह जो भी थी, यूहन्ना ने जल्दी से गलत अवधारणाओं में सुधार कर दिया। उसने कहा, ''अब भी बहुत से मसीह विरोधी उठ खड़े हुए हैं'' (आयत 18ख)। उसने यह नहीं कहा कि ''एक मसीह विरोधी दो हज़ार वर्ष बाद उठ खड़ा होगा,'' बल्कि यह कहा कि '' *बहुत से* मसीह विरोधी उठ खड़े *हुए हैं।*''

इसी अध्याय की आयत 22 में, यूहन्ना ने विस्तार से बताया कि वे मसीह विरोधी कौन थे: ''झूठा कौन है ? केवल वह *जो यीशु के मसीह होने से इनकार करता है*; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इनकार करता है।'' सात कलीसियाओं के नाम पत्रों पर अपने पाठों में, हमने ''अध्यात्म ज्ञानी'' कहलाने वाले एक भाग की बात की थी।[16] अन्य झूठी शिक्षाओं में अध्यात्म ज्ञानी सिखाते हैं कि ''यीशु का जन्म किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह हुआ और मृत्यु एक सामान्य व्यक्ति के रूप में ही हुई। उनका मानना है कि यीशु के बपतिस्मे के समय ईश्वरीय आत्मा, 'मसीह' उस पर उतरा परन्तु क्रूस से पहले उसे छोड़ गया। इस कारण 'मसीह' तो ईश्वरीय था परन्तु यीशु नहीं।''[17] इसलिए ये झूठे शिक्षक इनकार करते हैं (यूहन्ना के शब्दों में कहें तो) ''कि यीशु ही मसीह है।'' ध्यान दें कि यूहन्ना ने (''ही'') के साथ ज़ोर दिया है कि जो कोई यह इनकार करता है कि ''यीशु ही मसीह है, वही मसीह का विरोधी'' है।

अपने पहले पत्र के अध्याय 4 में, यूहन्ना ने ''मसीह विरोधी'' की पहचान पर ज़ोर दिया: ''और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है, जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो कि वह आने वाला है, और

अब भी जगत में है'' (आयत 3)। प्रेरित ने फिर संकेत दिया कि उसके पाठकों ने ''मसीह विरोधी'' के आने की बात सुनी हुई थी और फिर ज़ोर दिया कि उसकी शैतानी आत्मा *पहले से* मौजूद थी। दो हज़ार वर्ष तक प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

अपने दूसरे पत्र में, यूहन्ना ने फिर ज़ोर दिया कि ''मसीह विरोधी'' होने के लिए कई झूठे शिक्षकों ने योग्यता पा ली थी: ''क्योंकि *बहुत से* ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया: भरमाने वाला और *मसीह का विरोधी यह है* '' (2 यूहन्ना 7)। यूहन्ना के पत्रों से यह निष्कर्ष निकलना चाहिए कि ''मसीह का विरोधी'' कोई भी और हर वह व्यक्ति है, जो यह इनकार करता है कि यीशु देह में होकर आया, परमेश्वर का इकलौता पुत्र है।[18] ऐसे लोग यूहन्ना के समय भी थे और आज भी हैं।

प्रकाशितवाक्य वाला ''पशु'' (प्रकाशितवाक्य 11:7)

''मसीह विरोधी'' की यूहन्ना की व्याख्या देख लेने के बाद प्रकाशितवाक्य 11 वाले ''पशु'' की पहचान ''मसीह विरोधी'' के रूप में करने का कोई कारण है ?[19] नहीं। जैसा कि हम देखेंगे कि पशु का मुख्य काम मसीह को अपमानित करना नहीं, बल्कि उसके लोगों की हत्या करना था। पशु मसीहियत के संदर्भ में खड़ा होने वाला कोई गुट नहीं था, बल्कि जैसा कि हम देखेंगे, वह पशु रोमी सरकार था और किसी भी व्यक्ति या संगठन के लिए हो सकता है, जिसका इस्तेमाल शैतान सुसमाचार को फैलने से रोकने के लिए करता है।

लोगों ने 2 थिस्सलुनीकियों 2 के पौलुस के रहस्यमय शब्दों का आधार अपनी बनावटी शिक्षाओं के लिए लिया। फिर उन्होंने 1 और 2 यूहन्ना में यूहन्ना की शब्दावली से उसे मिलाया। अन्त में उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ''पशु'' की अपनी व्याख्या में इसे अपनाया। यह exegesis (वचन की व्याख्या) नहीं, बल्कि ''eisogesis'' (अर्थात मन से वचन की व्याख्या) है, यानी जैसे वचन को कोई सिखाना चाहता हो वैसे पढ़ना, न कि वह सिखाना, जो यह सिखाना चाहता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक या बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक का अध्ययन करने का यह तरीका नहीं है।

प्रकाशितवाक्य के अपने अध्ययन को जारी रखते हुए, आइए खुले मन और ईमानदारी के साथ प्रत्येक आयत को सिखाने का हर प्रयास करें (लूका 8:15)।[20]

सारांश

इस पाठ के आरम्भ में, मैंने उसकी जिसे प्रकाशितवाक्य में ''पशु'' कहा गया है, पर जेम्स एफिर्ड की टिप्पणी की बात की थी। पाठ समाप्त करते हुए मैं यह टिप्पणी पूरे विवरण के साथ देता हूं:

> इस वचन के बारे में कुछ जिज्ञासा पर भी ध्यान जाता है। ''मसीह विरोधी'' का कोई उल्लेख नहीं है। नये नियम में आकृतियों के लिए इस शब्द का और विशेषकर प्रकाशितवाक्य में पशु का इतना इस्तेमाल हुआ है ... कि लगभग हर कोई इस

आकृति को इसी शब्द से जानता है। परन्तु प्रकाशितवाक्य के लेखक को मालूम नहीं। वास्तव में यूहन्ना ने पूरी पुस्तक में एक बार भी इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया! नये नियम में एकमात्र जगह, जहां यह मिलता है, वह यूहन्ना की पत्रियां हैं, जहां मसीह विरोधी उसे कहा गया है, जो यह इनकार करता है कि यीशु देह में होकर आया (तुलना 1 यूहन्ना 2:22)। यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया और ''मसीह विरोधी'' के विषय में आज लोगों के मन में कुछ परिभाषाएं पाई जाती हैं। इसलिए अच्छा यही है कि इसके या प्रकाशितवाक्य की अन्य आकृतियों के लिए इस पदनाम का इस्तेमाल न किया जाए। यूहन्ना को अपनी इच्छा से इन आकृतियों की परिभाषा देने और वर्णन करने की अनुमति देना सबसे अच्छा ढंग है।[21]

मैं इसमें केवल ''आमीन'' ही जोड़ सकता हूं!

टिप्पणियां

[1]जेम्स एम. एफिर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 92. एफिर्ड की टिप्पणी अध्याय 13 पर उसकी टिप्पणियों में आती है, परन्तु अध्याय 13 वाला पशु वही है, जो अध्याय 11 में है। [2]कई इवेंजलिकल लेखक मसीह विरोधी को यीशु के द्वितीय आगमन से थोड़ा पहले दिखाते हैं। प्रीमिलेनियलिस्ट लोग मसीह विरोधी को क्लेश के अपने काल्पनिक सात वर्षों के बीच उठता दिखाते हैं। [3]जिम मैक्गुइगन, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 208. मैक्गुइगन मसीह विरोधी की किसी दूसरे की अवधारणा का वर्णन कर रहा था, न कि उस अवधारणा में अपने विश्वास की पुष्टि। [4]इस तथ्य के बावजूद कि ''मसीह विरोधी'' शब्द का सबसे पहला इस्तेमाल प्रेरित यूहन्ना के पत्रों में मिलता है, ''मसीह विरोधी'' (या ''मसीह का विरोधी'') पर कई लेखों का आरम्भ मूर्तिपूजकों की मिथ्या और यहूदी परम्पराओं के साथ होता है। ''मसीह विरोधी'' के बारे में जो यूहन्ना कहना चाहता था, उसकी मिथ्या और परम्पराओं में कोई झलक नहीं मिलती। [5]NASB में "man of lawlessness" है। ''पाप तो व्यवस्था का विरोध है'' (1 यूहन्ना 3:4) जिस कारण दोनों शब्दों में बहुत कम अन्तर है। [6]मिलर बर्रोस, *एन आउट लाइन ऑन बिब्लिकल थियोलॉजी* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1946), 196. [7]रेमंड सी कैल्सी, द *लैटर्स ऑफ़ पाल टू द थिस्लोनियंस* , द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968), 160. पौलुस ने संकेत दिया कि वह उसकी समीक्षा कर रहा था, जिसे वह पहले अपने पाठकों को सिखाता था (2 थिस्सलुनीकियों 2:5)। यह विषय थिस्सलुनीके के लोगों के लिए उतना उलझाने वाला नहीं होगा जितना आज हमारे लिए है। [8]यदि पौलुस के मन में कोई विशिष्ट व्यक्ति था, तो हो सकता है कि ''पाप का पुरुष'' रोमी सम्राटों में से कोई हो। वर्षों से, प्रोस्टेंट टीकाकारों में सबसे प्रसिद्ध व्याख्याओं में से एक यह रही है कि यह व्यक्ति पोप को कहा गया है। यह 2 थिस्सलुनीकियों 2:3 वाले ''धर्म का त्याग'' शब्द से मेल खाता है। इस बात को समझें कि 2 थिस्सलुनीकियों 2 की कोई भी व्याख्या समस्याओं से रहित नहीं है। [9]यदि पौलुस का ''पाप का पुरुष'' सम्राटों में से किसी एक (या रोमी सरकार) के रूप में था तो इससे यह व्याख्या हो सकती है कि अपोकलिप्टिक भाषा का इस्तेमाल क्यों किया गया, रोमी अधिकारियों के साथ विवाद से बचने के लिए। हमने पहले सुझाव दिया था कि प्रकाशितवाक्य में अपोकलिप्टिक भाषा के इस्तेमाल के लिए यह एक कारण हो सकता है। [10]कैल्सी, 164. यदि पौलुस ने सचमुच अपोकलिप्टिक भाषा का इस्तेमाल किया तो वह बुराई के किसी और वर्तमान रूप *के अलावा* मसीही

युग के ऐसे ही रूपों का विचार कर रहा होगा।

[11]हार्वे जे. एस. ब्लेनली, *बेकन बाइबल कमैंट्री,* अंक 10, *हिब्रूस-रैवलेशन* (कैंसस सिटी, मिज़ोरी: बेकन हिल प्रैस, 1967), 372. [12]*दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ओर्र (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 5:2969 में रोलिन हाऊ वाकर, ''द सेकंड एपिस्टल ऑफ पाल टू द थिस्सलोनियंस।'' ''पहली शताब्दी के हवाले'' के सम्बन्ध में यह हो सकता है कि 2 थिस्सलुनीकियों 2 वाले ''पाप का पुरुष'' और प्रकाशितवाक्य के ''पशु'' में कोई सम्बन्ध हो, क्योंकि 2 थिस्सलुनीकियों वाली शक्ति रोमी कानून और वह ''पुरुष'' सम्राट को कहा गया। जैसा पहले कहा गया है, 2 थिस्सलुनीकियों 2 *किसी भी* व्याख्या के सम्बन्ध में सैद्धांतिक होने के लिए बहुत स्पष्ट नहीं है। [13]डी. आर. डंगन *हरम्युनिटिक्स* (डिलाइट, आरकैंसा: गास्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 188. [14]''अन्तिम समय'' का अर्थ यह नहीं है कि यूहन्ना के विचार में था कि द्वितीय आगमन निकट था। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों का यह विश्वास नहीं था कि मसीह उनके जीवनकाल में ही वापस आने वाला है परन्तु उनका यह विश्वास अवश्य था कि वह उनके जीवनकाल में आ *सकता* था, जैसे मुझे और आपको विश्वास करना चाहिए कि वह हमारे जीवनकाल में आ सकता है। [15]डब्ल्यू ई. वाइन *द एक्सपेंडेड वाइन 'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहल्नगर्गर III विद जेम्स ए. सवैन्सन (मिनियापुलिस, मिनैसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 54-55. [16]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''हृदय की समस्या वाली कलीसिया,'' ''पाप की नगरी में कलीसिया,'' और ''कलीसिया जहां की सदस्या इज़ेबेल थी'' पाठों में देखें। [17]जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स, *द लैटर्स ऑफ़ जॉन,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968), 68. [18]''मसीह विरोधी'' पर यूहन्ना की स्पष्ट शिक्षा के सामान्य उत्तर में यह कहा जाता है, ''माना कि यूहन्ना 'मसीह विरोधियों' की बात कर रहा था, परन्तु इससे यह सम्भावना खत्म नहीं होती कि बाद में 'मसीह विरोधी' आएगा नहीं।'' इस तर्क के साथ समस्या यह है कि ''मसीह विरोधी'' के लिए बाइबल में केवल यूहन्ना के पत्रों में ही हवाले मिलते हैं और यूहन्ना ने ''मसीह विरोधी'' कहलाने वाले किसी विशिष्ट व्यक्ति के बारे में कुछ नहीं कहा, जो द्वितीय आगमन से थोड़ा पहले आएगा। [19]दूसरी और तीसरी शताब्दी के परमेश्वर की प्रेरणा रहित कई लेखकों ने इरेनियुस से लेकर (लगभग 185 ई.) प्रकाशितवाक्य 13 वाले पशु के लिए ''मसीह विरोधी'' शब्द का इस्तेमाल किया। जॉर्ज मिलिंगन ने कहा कि उनकी टिप्पणियों को ''उन टीकाकारों द्वारा पवित्र शास्त्र से मिले आंकड़ों के आधार पर अपनी कल्पनाओं के परिणाम कहा'' जा सकता है (*सेंट पॉल 'स एपिस्टल्स टू द थिस्सलोनियंस* [लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1908], 159)। ''कल्पनाओं'' शब्द को रेखांकित कर लें। (पूरी ईमानदारी के साथ यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ये आरम्भिक लेखक ''मसीह विरोधी'' पर कई आधुनिक लेखकों के चरमों से बचते थे।) [20]यदि आप इस विशेष अध्ययन का इस्तेमाल प्रवचन के लिए करना चाहते हैं तो आपको व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनानी होगी। यह प्रासंगिकता उन लोगों को ध्यान में रखकर हो सकती है, जो यीशु के ईश्वरीय होने का इनकार करते हैं: ''उन्हें पहचानना सीखें और उनका विरोध करें!'' आप वचन के ठोस ढंग का इस्तेमाल करना सीखने की प्रासंगिकता भी बना सकते हैं: ''हर वचन को पढ़कर पिछली पूर्वधारणाओं के कूड़े में न फैंक दें।''

[21]एफिर्ड, 92.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''मसीह विरोधी'' के लिए यूनानी शब्द का मूल अर्थ क्या है (जैसे यूहन्ना के पत्रों में इस्तेमाल हुआ है)?
2. क्या आपने ''मसीह विरोधी'' के बारे में कोई अज़ीब शिक्षा सुनी है? वह शिक्षा क्या है?
3. क्या 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10 की व्याख्या करना कठिन है? बाइबल की व्याख्या

का मुख्य नियम यह है कि ''हमें अस्पष्ट आयतों के आधार पर कोई मूल शिक्षा नहीं बनानी चाहिए।'' 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10 की कई सम्भावित व्याख्याएं हैं, जिस कारण हमें उन आयतों के आधार पर आने वाले ''मसीह विरोधी'' के बारे में कोई शिक्षा नहीं फैलानी चाहिए?

4. बाइबल में वह एकमात्र जगह कहां है, जहां ''मसीह विरोधी'' शब्द मिलता है? यूहन्ना क्या सिखाता है कि ''मसीह विरोधी'' कौन है?
5. यूहन्ना वाले ''मसीह विरोधी'' और प्रकाशितवाक्य 11, 13 और 17 वाले ''पशु'' के बारे में आप जो पहले से जानते हैं, उसमें अन्तर करें।
6. क्या पूर्व धारणा के बिना पवित्र शास्त्र के पास आना कठिन है? परन्तु क्या ऐसा करने के लिए हर प्रयास करना आवश्यक है।